मौजूदा आर्थिक आबहवा

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ — सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई — अंक ३८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १९ नवम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

महाराष्ट्रको संतोष होना चाहिये

कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने बम्बअी राज्यकी पुनर्रचनाके बारेमें जो बुद्धिमानीका निर्णय किया है, अुसके लिअे वह लोगोंके अभिनन्दनकी पात्र है। राज्य-पुनर्रचना कमीशनकी सिफारिश लगभग निष्फल प्रस्ताव जैसी ही थी, क्योंकि महाराष्ट्रने अुसे माननेसे बिलकुल अिनकार कर दिया था। गुजरात (जिसमें कच्छ और सौराष्ट्र भी शामिल हैं) अनुशासनके खातिर अुसे स्वीकार करनेके लिअे तैयार था। लेकिन जब अुसने देखा कि महाराष्ट्र अुसे मूल रूपमें स्वीकार करनेकी वृत्ति नहीं रखता, वह अुसे तभी स्वीकार करेगा जब कि राज्य-पुनर्रचना कमीशनके द्विभाषी राज्यके प्रस्तावमें विदर्भको शामिल करनेका सुधार किया जाय, तब गुजरातने कमीशनके मूल प्रस्तावको स्वीकार करनेकी अपनी बात दोहराअी और महाराष्ट्र द्वारा सुझाये गये संशोधित रूपमें अुसे माननेसे अिनकार कर दिया। लेकिन अुसने अपनी यह अिच्छा बताअी कि अिस प्रस्तावके बदले वह अपने वैकल्पिक प्रस्तावको मान्य रखेगा — अर्थात् अगर महाराष्ट्र कमीशनके मूल प्रस्तावको स्वीकार न करे तो बेहतर होगा कि वर्तमान बम्बअी राज्यको तीन भागोंमें बांट दिया जाय: महाराष्ट्र, गुजरात और बम्बअी शहर।

गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके निर्णयका गुजरातके लगभग सारे दलोंने स्वागत किया। महाराष्ट्रका समस्त गुजराती-भाषी और समस्त मराठी-भाषी प्रदेशोंका संयुक्त राज्य, जिसकी राजधानी बम्बअी हो, रचनेका निर्णय बताता था कि वह संयुक्त महाराष्ट्रकी रचनाको नैतिक सिद्धान्तके रूपमें नहीं मानता, बल्कि अुसके अेवजमें कोअी दूसरा प्रस्ताव रखा जाय तो अुसे स्वीकार करनेके लिअे तैयार हो जायगा। लेकिन अितना तो निश्चित था कि वह राज्य-पुनर्रचना कमीशनके प्रस्तावसे सहमत नहीं होता।

अिस अुलझनसे बाहर निकलनेके लिअे किसी अुचित मार्ग पर पहुंचनेमें दो रुकावटें थीं: (१) क्या विदर्भ और नागपुर महाराष्ट्रके साथ जुड़ेंगे और अेक मराठी-भाषी राज्य बनायेंगे? और (२) क्या बम्बअी शहर महाराष्ट्रके साथ जोड़ा जायगा?

अिस मामलेमें कांग्रेस वर्किंग कमेटीने स्पष्ट और न्याययुक्त कदम अुठाया और यह निर्णय करके अुसने कमीशनकी सिफारिशोंमें सुधार कर दिया कि विदर्भको महाराष्ट्रके साथ जुड़नेके लिअे राजी किया जा सकता है, लेकिन बम्बअी शहरका अेक अलग राज्य बनेगा। और महाराष्ट्रके लिअे असंतुष्ट रहनेका कोअी कारण न रह जाय, अिसके लिअे वर्किंग कमेटीने अपने निर्णयमें यह शर्त जोड़ दी कि १९६१ के बाद अगर नअी चुनी गअी बम्बअी शहरकी धारासभा दो-तिहाअी बहुमतसे महाराष्ट्रके साथ जुड़नेका निर्णय करे तो बम्बअी शहर वैसा कर सकता है। अिस तरह दोनों कठिनाअियां दूर कर दी गअी हैं, और लगभग दिनोंदिन बिगड़ती जा रही दुःखद परिस्थिति शान्त और साफ हो गअी है।

आशा है महाराष्ट्रको समस्याके अिस अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण, न्याययुक्त और अुचित हलसे संतोष होगा; वह अिसे स्वीकार करेगा और अब कांग्रेस हाअी कमांडकी सहायतासे नागपुर और विदर्भको अपने साथ जुड़नेके लिअे राजी करके अिस हलको सफल बनाने पर अपना ध्यान केन्द्रित करेगा। मुझे आशा है कि विदर्भके लोग अेक मराठी-भाषी राज्यकी दीर्घ दृष्टिसे सारे प्रश्नका विचार करके यह हल तुरन्त स्वीकार कर लेंगे; नया राज्य भारतीय संघकी अच्छी प्रशासनिक अिकाअी बननेके लिअे न तो बहुत बड़ा होगा और न बहुत छोटा होगा।

११–११–'५५ — मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

भारतमें देहाती सभ्यताका निर्माण

[देहाती जीवन परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतसे २८ अक्तूबर, १९५५ को श्री वैकुंठभाअी मेहता द्वारा दिये गये अध्यक्षीय भाषणसे।]

देहाती जीवनके विविध पहलुओं पर अेक-दूसरेके साथ अुनके संबंधका खयाल रखकर ही विचार करना चाहिये। हमें अिन विविध पहलुओंका केवल योग नहीं, बल्कि अुनका समन्वय करना है। अपने रचनात्मक कार्यक्रमके जरिये महात्मा गांधी जिन विविध सामाजिक कार्योंका पोषण करते थे अुनको अेकसाथ जोड़कर रखनेमें गांधीजीका यही अुद्देश्य था; वे समग्र दृष्टिसे अुनका समन्वय करना चाहते थे। हमारे योजनाकारोंने देहाती अिलाकोंकी समग्र अुन्नतिके लिअे राष्ट्रीय विकास-सेवाके तंत्र और समूह-विकास योजनाओंकी पद्धतिको अपनानेका जो निर्णय किया है अुसमें भी यही सिद्धान्त दिखायी पड़ता है। बम्बअी सरकार द्वारा चलाये जा रहे सर्वोदय केन्द्रोंकी प्रेरणाका मूल भी यही विचारधारा है।

अधिक विस्तारमें गये बिना ही मैं यह कहना चाहूंगा कि देहाती भारतके लिअे योजना बनाते समय हमें कुछ मुद्दों पर विचार करना आवश्यक है। समूह-विकास योजनाओंमें लोगोंके लाभार्थ जो कार्य किये जा रहे हैं अुनमें अिस बातकी पूरी कोशिश की जाती है कि लोग अव्वल तो अुनमें सक्रिय भाग लें और अगर यह संभव न हो तो सहयोग अवश्य करें। लेकिन अकसर होता यह है कि कार्यकी प्रेरणा और प्रारंभ योजना-विभाग (प्रोजेक्ट्स अेड-मिनिस्ट्रेशन) करता है और अुसकी जिम्मेदारी अिस विभागसे संबंधित अधिकारियों पर होती है। मैं तो कहूंगा कि हमें प्रगतिका वेग धीमा पड़ जानेका खतरा अुठाकर भी कार्यकी प्रत्येक अवस्था और स्तर पर लोगोंकी संस्थाओंको ही प्रारंभ और पहल करने तथा जिम्मेदारी अुठानेकी तालीम देना चाहिये। लोगोंकी संस्थाओंसे मेरा मतलब अमुक कार्यके लिअे सरकारके द्वारा गठित विशेष

www.vinoba.in

समितियों या कानूनके द्वारा स्थापित पंचायत जैसी संस्थाओंसे नहीं है। मेरे खयालसे समाज-सेवाका काम करनेवाली स्वेच्छासे बनी हुअी संस्थायें या सहकारी समितियां निर्माण-कार्यमें, खासकर जहां सफलताकी दृष्टिसे निर्माण नीचेसे करना अिष्ट माना गया हो, ज्यादा अच्छा योग दे सकती हैं।

हमारे देहातोंकी आर्थिक हालतकी अभी हालमें की हुअी अेक जांचसे पता चला है कि जहां पंचायतें और सहकारी समितियां अपना काम स्थिरतापूर्वक और सफलताके साथ कर रही हैं, वहां भी अुनके कार्योंका लाभ मुख्यतः देहाती समाजके ज्यादा अच्छी हालतवाले वर्गोंको ही मिलता है और गरीब वर्ग, जिनमें परिगणित जातियोंकी गिनती भी की जा सकती है, अकसर अुनसे अछूते ही रह जाते हैं। यह चीज किस हद तक समाजके अच्छी हालतवाले वर्गोंके प्रभावका परिणाम है और कितनी मात्रामें हमारी जाति-प्रथा अुसके लिअे जिम्मेदार है, अिस बातका ठीक-ठीक निर्णय करना कठिन है। लेकिन यह तय है कि यदि अखण्ड और समरस देहाती समाजका विकास होना हो, तो जाति-प्रथा खतम हो जानी चाहिये। हमें स्वीकार करना चाहिये कि खासकर हमारे गांवोंमें अस्पृश्यता बीते जमानेकी बात नहीं हो गयी है; किसी न किसी रूपमें आज भी चल रही है। जब तक जाति-प्रथा खतम नहीं हो जाती, तब तक मैं 'जाति' और 'अजाति' के बीचके अन्तरके मिट जानेकी कल्पना ही नहीं कर सकता।

अब अेक दूसरे विषय पर आअूं। अुस संबंधमें मैं यह कहना चाहता हूं कि यद्यपि मैं 'पैदा करो या नष्ट होनेके लिअे तैयार हो जाओ' का हिमायती नहीं हूं, लेकिन मैं यह जरूर मानता हूं कि यदि हम अुन लाखों-करोड़ों लोगोंके लिअे, जो या तो बेकार हैं या अर्ध-बेकार हैं, अुत्पादक काम-धंधेकी व्यवस्था नहीं करते हैं तो देशका भविष्य सुरक्षित नहीं है।

यदि हम अिस प्रयत्नमें असफल होते हैं तो लोगोंको जो काम-धंधा दिया जायगा, वह या तो अनुत्पादक होगा या फिर हमें लाखों लोगोंको बेकारीकी राहत देना पड़ेगी। लोगोंको बेकार रखने और फिर बेकारीके कष्टोंसे अुन्हें बचानेके लिअे राहत देनेका रास्ता अेकदम निषिद्ध माना जाना चाहिये। अैसी हालतमें हमारे लिअे अेक ही रास्ता रह जाता है। वह यह कि हम अपनी देहाती आबादीके बेकार और अर्ध-बेकार लोगोंको अुद्योगोंमें लगायें। खेती और अुद्योगोंमें आज जो असन्तुलन है, अुसे तो हमें बिना देरी किये शीघ्र ही दुरुस्त करना है; यह काम हमारी राष्ट्रीय नीतिका अेक सोच-समझकर तय किया गया अंग ही माना जाना चाहिये। यहां यह बताना जरूरी है कि गांवोंसे बड़े शहरोंकी तरफ आज हम जो अनियंत्रित मानव-प्रवाह बहता हुआ देख रहे हैं वह गंदी बस्तियोंका और कअी तरहके दूसरे सामाजिक सवाल पैदा करता है। स्वस्थ सुव्यवस्थित समाजके निर्माणके हितमें हमें अिस प्रवाहको रोकना होगा। अैसा तभी हो सकता है जब हम लोगोंके लिअे देहातोंमें ही अुपयुक्त और आयप्रद काम-धंधेकी व्यवस्था कर दें।

हिन्दुस्तानमें अभी तक जो अुद्योगीकरण हुआ है वह असंतुलित हुआ है। अुसने हजारों-लाखों लोगोंसे अुनका परंपरागत धंधा छीन लिया है और जो नया काम-धंधा पैदा किया है वह अितना भी नहीं है कि अुसमें अुनका अेक छोटा अंश भी खप सके। अुद्योगीकरणकी अिस पद्धतिकी अिन लाखों लोगोंको भविष्यमें काम-धंधा दे सकनेकी क्षमता भी बहुत ही सीमित है। दूसरी पंचवर्षीय योजनामें योजनाके अेक अंगकी तरह ग्रामोद्योगों और छोटे अुद्योगोंको जो महत्त्व दिया गया है अुसका कारण हमारी आर्थिक हालतके अिस नग्न सत्यका स्वीकार किया जाना ही हो सकता है।

यह मत स्वीकार कर लिया जाय तो अुसके दो अर्थ होंगे। अेक तो यह कि राज्यको अिन अुद्योगोंके संजीवन और विकासके लिअे जो साधन-सामग्री और संघटन चाहिये अुसकी व्यवस्था कर देनी होगी; दूसरे, अुसे यह भी देखना होगा कि परिवर्तनके अिस कालमें, जब कि सारे अुद्योगोंको नयी परिस्थितियोंके अनुकूल बनना होगा, अिन ग्रामोद्योगोंको खानगी क्षेत्रके बड़े पैमानेवाले संघटित अुद्योगोंकी प्रतियोगितासे बचाया जाय।

अिस तरह, यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि हमारी देहाती अर्थ-व्यवस्थाके खेती-संबंधी और औद्योगिक, दोनों क्षेत्रोंमें हमें नयी समाज-रचनाकी योजना करनी है। कुछ समय तक हम यह कहते रहे कि हमारे राष्ट्रीय प्रयत्नोंका लक्ष्य अेक सहकारी जनराज्य कायम करना है। आज हम अपना आदर्श समाजकी समाजवादी व्यवस्थाको मानने लगे हैं। अिन दोनों लक्ष्योंमें कोअी असंगति नहीं है, क्योंकि समाजवादका मतलब महज अितना ही नहीं है कि अुद्योगोंका राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। मेरा खयाल है कि देहाती अर्थ-व्यवस्थाके संदर्भमें हमारा प्रगतिका लक्ष्य सहकारी जनराज्य ही माना जाय तो अनुपयुक्त नहीं होगा। हमें याद रखना चाहिये कि महात्मा गांधीका अेक सपना भारतमें देहाती सभ्यता और संस्कृतिका निर्माण करना भी था।

(अंग्रेजीसे)

कल्याण-राज्य बनाम सर्वोदय-राज्य

[ता० १२-११-'५५ के अंकके अनुसंधानमें]

३

अब अिस बातसे कोअी अिनकार नहीं करता — सच तो यह है कि प्रचलित मत अिसी दृष्टिबिंदुकी ओर आता जा रहा है — कि राज्यका प्रधान कर्तव्य जनताका और खासकर अैसे लोगोंका हित करना है जो किसी तरहकी मदद पाये बिना अपनी सेवा करनेकी योग्यता कायम नहीं रख सकते। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, समाजवादी और अुदार पूंजीवादके हिमायती, दोनों ही यह दावा करते हैं कि अुनका अुद्देश्य कल्याण-राज्यकी स्थापना करना है।

अिस तरह कल्याण-राज्य समाजवादी राज्य भी हो सकता है और वह पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाकी चतुःसीमामें रहकर भी अपना काम कर सकता है। किसी राज्यको कल्याण-राज्यका नाम दिया जा सके, अुसकी आवश्यक शर्त यह मालूम होती है कि अुसे सामान्य जनताके कल्याणका संवर्धन करनेके लिअे और किसीका जीवन-मान जीवनकी आवश्यक अल्पतम सुविधाओंके स्तरके नीचे न गिरे, अिस बातको सुनिश्चित बनानेके लिअे अमुक विशिष्ट कदम अुठाने चाहिये। पूरी तरह विकसित सामाजिक बीमाकी नीतियां आयकी सुरक्षितता देती हैं, कमाअी करनेकी शक्ति कुछ समयके लिअे या हमेशाके लिअे नष्ट हो जाय तो अैसे व्यक्तियोंके भरण-पोषणका प्रबंध करती हैं, और जन्म, विवाह, बीमारी या मृत्युके अवसरों पर जो विशेष खर्च होता है, अुसकी पूर्तिकी व्यवस्था करती हैं। गरीबी और अुससे अुत्पन्न दुःख-कष्ट आदिके निवारणके लिअे ये राज्योंके संभाव्य हथियार हैं। कोअी राज्य अिस अुद्देश्यको जितना अधिक पूरा करता है, आदर्शकी दिशामें अुसकी अुतनी ही अधिक प्रगति होती है।

जन-कल्याणकी योजनाओंका अमल

व्यवहारमें जन-कल्याणकी अिन योजनाओंके अमलमें समाजवादी और पूंजीवादी राज्योंमें कोअी खास फर्क नहीं होता। बेकारीकी दशामें मदद, बुढ़ापेमें पेंशन, राष्ट्रीय आरोग्य बीमा, बालकोंकी संभाल आदि सामाजिक बीमेकी और पूरी रोजगारी सिद्ध करनेके लिअे आवश्यक योजनायें राज्यकी ओरसे गढ़ी जाती हैं और कार्यान्वित की जाती हैं।

www.vinoba.in

समाजवादी राज्यमें जनहितकी ये योजनायें राज्यकी ओरसे होनेवाले आयोजनमें आती हैं और अुसका अंग बन जाती हैं। अुन पर कितना खर्च आयगा, अिसका हिसाब पहलेसे कर लिया जाता है और देशके समग्र विकासकी सामान्य योजना बनाते समय ही अुसकी व्यवस्था कर दी जाती है। किस प्रकारकी सेवाओंकी व्यवस्था करनी चाहिये और ये सेवायें किस कीमत पर दी जानी चाहियें, राज्य अिसका निर्णय करता है और पैसा तथा साधन जिस प्रमाणमें अुपलब्ध हों, अुसके अनुसार अुनका बंटवारा कर दिया जाता है। विविध बीमा-योजनाओंमें से किन्हें लेना और अुनका विस्तार कितने वेगसे करना अिन प्रश्नोंका अुत्तर सामान्य योजनामें समाविष्ट विविध विकास-कार्योंके दावों पर निर्भर होता है। अिस विषयमें अन्तिम निर्णय सरकारके हाथमें होता है। यदि साधन-सामग्रीको अनेक कार्योंमें बांटनेके कारण सामान्य विकास-योजनाको हानि पहुंचेगी, अैसा प्रतीत होता है तो अिन बीमा-योजनाओंका क्षेत्र मर्यादित कर दिया जाता है अथवा अुनमें अिस तरह काट-कसर कर दी जाती है कि आर्थिक विकासकी गतिको ज्यादा आघात न पहुंचे। संक्षेपमें, समाजवादी राज्यमें जन-हितकी योजनाओंको अेक-अेक, दो-दो करके हाथमें नहीं लिया जाता बल्कि देशके सामान्य विकासकी अच्छी तरह विचार करके तैयार की हुअी योजनामें अुनका समावेश किया जाता है।

पूंजीवादी व्यवस्थाके अन्तर्गत कल्याण-राज्य किसी व्यवस्थित रीतिसे तैयार की हुअी योजनाके अनुसार काम नहीं करता। राज्य सामाजिक बीमाकी योजनायें दाखिल करता है और अुनके खर्चका अधिकांश विविध करोंसे और सरकारी आयके दूसरे साधनोंसे पूरा किया जाता है। कुछ कार्योंके लिअे लोगों पर विशेष कर भी लगाये जाते हैं और पैसा वसूल किया जाता है।

अिंग्लैण्डमें जनहितकी योजनायें

अिंग्लैण्डका अुदाहरण लें तो सामाजिक बीमाका सिद्धान्त राष्ट्रीय आरोग्य, राष्ट्रीय बीमा तथा राष्ट्रीय मदद और बालकोंका कानून आदि कानूनोंके द्वारा कार्यान्वित किया गया है। अिंग्लैण्डमें कल्याण-राज्यकी अिमारत अिन चार खम्भों पर खड़ी की गयी है। राष्ट्रीय आरोग्य योजनाके अन्तर्गत अुन्होंने जनताके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्यके सुधारके लिअे अेक व्यापक आरोग्य सेवा-कार्यकी व्यवस्था की है। अैसा कहा जा सकता है कि वहां डॉक्टरी सेवा तो लगभग मुफ्त ही कर दी गयी है, क्योंकि राष्ट्रीय आरोग्य सेवाके अन्तर्गत जो भी मदद दी जाती है अुसकी कीमत, जो लोग पैसा दे सकनेकी स्थितिमें नहीं हैं, अुनके लिअे हमेशा माफ कर दी जाती है। राष्ट्रीय बीमा कानून बेकारी, बीमारी तथा मातृत्वकी स्थितियोंमें राहत देकर और सेवा-निवृत्त लोगोंको पेंशन, विधवाओं और पालकोंको मदद तथा मृत्यु-ग्राण्ट आदिके द्वारा जनताको आर्थिक सहायता पहुंचाता है। राष्ट्रीय सहायता कानूनके जरिये अपाहिज, बीमार, वृद्ध और अैसे ही दूसरे लोगोंके कल्याणके लिअे, तथा जिनके पास निर्वाहका कोअी साधन नहीं है अुनकी अथवा जिनके साधन (राष्ट्रीय बीमा कायदाके अन्तर्गत मिलनेवाले लाभोंके बाद भी) अुनकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे काफी नहीं होते, अैसे लोगोंकी मददके लिअे अतिरिक्त व्यवस्था की गयी है। बालकोंका कानून १८ वर्ष तकके लड़के-लड़कियोंकी और यदि अुनके मां-बाप न हों, वे परित्यक्त हों, या मां-बापसे दूर रह रहे हों, या मां-बाप अुनकी परवरिश करनेमें असमर्थ हों तो अुससे भी अधिक अुम्रके लड़के-लड़कियोंकी संभाल और कल्याणके अुद्देश्यसे बनाया गया है।

अिस तरह अिंग्लैण्डमें बालक अथवा विधवासे लगाकर बेकार, अथवा मरण-शय्या पर पड़े हुअे वृद्ध मनुष्य तकके सारे वर्गोंके लोगों तक फैली हुअी अेक सांगोपांग बीमा-योजना चालू है। राज्य अिस बातका प्रबंध करता है कि विपत्तिमें पड़े हुअे लोगोंको पर्याप्त मदद दी जाय और हरअेक व्यक्ति अपनी तथा अपने परिवारकी अल्पतम जरूरतें पूरी कर सके।

पूंजीवाद तथा समाजवादमें जनहितकी योजनायें

पूंजीवादी समाजमें, समाज कल्याणके लिअे ये कार्य देशकी साधन-सामग्रीका अुपयोग और विकास सोच-समझकर करनेवाली और समाजकी आवश्यकताओंके अनुसार अुनका क्रम निश्चित करनेवाली किसी सामान्य योजनाके अनुसार नहीं, बल्कि राजनीतिक आवश्यकताओं और राज्यके पास पैसेकी जैसी सुविधा हो अुसके अनुसार हाथमें लिये जाते हैं। लेकिन पूंजीवादी व्यवस्थाके अन्तर्गत चलनेवाला कल्याण-राज्य भी बीमाकी अैसी सारी विविध योजनाअें कार्यान्वित कर सकता है जिन्हें समाजवादी राज्य हाथमें लेना चाहेगा या लेता है। कारण यह है कि यद्यपि पूंजीवादी और समाजवादी व्यवस्थायें अुत्पादनके साधनोंकी मालिकीके बारेमें अेक-दूसरेसे भिन्न पड़ती हैं, लेकिन आर्थिक व्यवस्थाका संचालन दोनोंमें लगभग अेक-सा है। दोनों ही जिनका अुपयोग नहीं हुआ है अैसे मौजूदा संपत्ति-साधनोंके शीघ्र विकासके लिअे देशका बड़े पैमाने पर अुद्योगीकरण करनेमें विश्वास करते हैं। दोनोंका लक्ष्य अुत्पादनको बढ़ाना है और दोनोंमें अुद्योग विज्ञानकी आधुनिक खोजों और यंत्र-विज्ञानमें नयेसे नये सुधारोंका अुपयोग करके अेक-जैसी रीति पर चलाये जाते हैं। दोनों कच्चा माल सस्ता खरीदनेका और पक्के मालका निर्यात करके अुस पर मुनाफा कमानेका आग्रह रखते हैं। आन्तरराष्ट्रीय व्यापार, बाजारके व्यवहार और अुपयुक्त मूल्य-व्यवस्थाका अुनके लाभ-हानिके गणित पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अिस प्रक्रियामें दूसरे देशोंको जो हानि पहुंचती है अुसकी अुन्हें कोअी चिन्ता नहीं होती।

आर्थिक प्रवृत्तियां संपत्तिके अुत्पादनके आसपास घूमती हैं और लगातार चल सकनेके लिअे लोगोंकी अुत्तरोत्तर बढ़ती जानेवाली जरूरतों पर निर्भर करती हैं। चूंकि अुत्पादनके साधन राज्यकी मालिकीके और अुसके नियंत्रणमें होनेसे अुत्पादनके स्वरूपमें कोअी फर्क नहीं पड़ता और अुत्पादनकी प्रणाली ज्यों की त्यों वहीकी वही कायम रहती है, अतः आर्थिक दृष्टिसे पिछड़े हुअे लोगोंका दुःख दूर करनेके लिअे कल्याण-राज्यकी ओरसे — अुसका स्वरूप पूंजीवादी हो या समाजवादी — अुठाये जानेवाले कदम भी अेकसे होते हैं। सच तो यह है कि अिंग्लैण्डमें मजदूर सरकार द्वारा शुरू की गयी सामाजिक कल्याणकी योजनाओं और कॉन्ज़र्वेटिव्ह पक्षकी योजनाओंमें कोअी बड़ा फर्क नहीं दिखता। समाज-हितकी योजनाओंके लिअे अपने आग्रहके द्वारा कल्याण-राज्यका आदर्श अिन दोनों व्यवस्थाओंकी कार्यपद्धतियोंके बीचका अन्तर काफी कम कर देता है। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि खानगी व्यवसायकी व्यवस्थाके अन्तर्गत चलनेवाले कल्याण-राज्यमें सरकारके द्वारा अुठाये गये कदमोंके परिणामस्वरूप प्रचलित असमानताओंमें जो कमी आती है वह केवल आनुषंगिक है, क्योंकि अुसका मुख्य ध्येय जिन्हें जरूरत है अुन्हें राहत पहुंचाना है, आर्थिक असमानताओंको ही नष्ट कर देना नहीं है। लेकिन समाजवादी राज्य असमानतायें कम करनेके अुद्देश्यसे ही काम करता है और समाज-कल्याणकी योजनायें हाथमें लेता है।

(अंग्रेजीसे) (चालू)

पी० श्रीनिवासाचारी

सर्वोदय

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१९ नवम्बर १९५५

मौजूदा आर्थिक आबहवा

मैंने अपनी फाअिलमें श्री घनश्यामदास बिड़लाका अेक महत्त्वपूर्ण भाषण रख छोड़ा था, जिस पर अिन कालमोंमें अब मैं अपने विचार प्रकट करता हूं। बम्बअीके अुद्योगपतियोंकी अेक सभामें २९ जुलाअी, १९५५ को बोलते हुअे देशकी मौजूदा आर्थिक आबहवाके बारेमें अुन्होंने अपनी राय बताअी थी। यह अुन्होंने मुख्यतः अुद्योगपतियोंके सामने खड़े अिस प्रश्नका अुत्तर देनेके ध्येयसे किया था: "नये भारतके निर्माणमें हम लोग (यानी खानगी क्षेत्र) क्या भाग लेनेवाले हैं?" श्री बिड़लाने यह स्वीकार किया कि खानगी क्षेत्रकी स्थिति "अिस समय बड़ी नाजुक हो रही है। यह भी हो सकता है कि अिस क्षेत्रका बिलकुल लोप ही हो जाय।" लेकिन अुनका यह दृढ़ मत था कि खानगी क्षेत्र निश्चित रूपसे जिन्दा रहेगा, क्योंकि "वे (सरकार) चाहे जैसा भी सार्वजनिक क्षेत्र खड़ा करें, लेकिन आखिरमें खानगी क्षेत्रके बिना अुनका काम नहीं चलेगा। अिसका सीधासादा कारण यह है कि व्यावसायिक बुद्धि तो व्यवसायियोंके पास ही है;" जरूरत अिस बातकी है कि समयकी चुनौतीका सामना करनेके लिअे खानगी क्षेत्रवाले कमर कसकर तैयार हो जायं।

और अुनके विचारसे यह चुनौती बेकारीकी है। श्री बिड़लाने कहा कि बेकारी दो तरहकी है: (१) खेती करनेवालोंकी अर्ध-बेकारी और (२) पढ़े-लिखोंकी बेकारी। वे कबूल करते हैं कि खेतीसे संबंधित अर्ध-बेकारी हमारी आबादीके ७५ प्रतिशत भागको छूती है। लेकिन यह कहकर वे अुसे अुड़ा देते हैं कि "कृषिनिष्ठ अर्थरचना अेक हद तक ही मदद करती है," और काफी होशियारीसे दूसरे प्रकारकी बेकारीके महत्त्वकी विस्तारसे चर्चा करते हुअे कहते हैं, "अिन नौजवान लोगोंको जब मजबूरन बेकार रहना पड़ता है तब ये देशके लिअे गंभीर खतरा बन जाते हैं। यह बेकारी केवल आपके ही लिअे चुनौती नहीं है, बल्कि हममें से हरअेकके लिअे चुनौती है।" और श्री बिड़ला घोषित करते हैं कि केवल पूंजीवाद और अुद्योगीकरणके जरिये ही अिस चुनौतीका सामना किया जा सकता है, न कि गांधीजीकी कल्पनाकी कृषि-अुद्योगनिष्ठ अर्थरचनाके छोटे पैमानेवाले ग्रामोद्योगोंके जरिये।

अपनी औद्योगिक पुनर्रचनाकी योजनामें श्री बिड़ला छोटे पैमानेके अुद्योगोंको भी स्थान देते हैं, लेकिन सर्वथा भिन्न सन्दर्भ या भिन्न स्वरूपमें। अुनके मतानुसार अिन छोटे पैमानेके अुद्योगोंको भारी या बड़े पैमानेके अुद्योगोंके आधार पर लटके रहना या अुनके आसपास घूमते रहना चाहिये। और अुनका यह पक्का विश्वास है कि बड़े पैमानेके अुद्योग खानगी क्षेत्रके हाथमें होने चाहियें। अिस तरह अुनके मतानुसार औद्योगिक योजनाका अर्थ यह होगा कि राष्ट्रका औद्योगिक जीवन खानगी पूंजीपतियों और अुद्योगपतियोंके आसपास घूमता रहना चाहिये — जिसका परिणाम अैसी आर्थिक व्यवस्था होगी जो आम तौर पर पूंजीवादके नामसे पहचानी जाती है। और हम जानते हैं कि अब खास करके अमेरिकामें, जो बीसवीं सदीके पूंजीवादके नये संस्करणका घर है, अर्थशास्त्रियोंका अेक अैसा वर्ग है जो कहता है कि १९वीं सदीका पूंजीवाद बुरा था, लेकिन अब वह बदलकर लोकतांत्रिक और सहकारी रूप ग्रहण करता जा रहा है, जिसका ध्येय समाजवादकी ही तरह कल्याण-राज्यकी स्थापना है।

गांधीजी अिससे सर्वथा भिन्न वस्तुकी हिमायत करते थे। वे मुक्त और स्वतंत्र शान्तिप्रिय समाजकी अपनी योजनाके केन्द्रमें जन-साधारणको और अुसके स्वावलंबी जीवन तथा परिश्रमको रखते थे। अैसी योजनामें बड़े पैमानेके या भारी अुद्योगोंका सर्वथा निषेध नहीं है। लेकिन अुनका स्थान अैसे औद्योगिक समाजके व्यापक क्षेत्रमें होता है, जो अधिकतर अपने गांवोंमें रहता है और अपनी रोजाना जरूरतकी भोजन, कपड़े वगैरा जैसी चीजें विकेन्द्रित पद्धति तथा अैसे सादे औजारों द्वारा पैदा करता है जो अुत्तम वैज्ञानिक कुशलता भी अुसे दे सकती है। अैसी समाज-व्यवस्थामें मनुष्यका स्थान सर्वोपरि होगा, मुट्ठीभर लोगोंके नियंत्रणमें रहनेवाले पैसे या मशीनका नहीं। गांधीजी भारी अुद्योगोंकी गाड़ीको राष्ट्रके विशाल छोटे पैमानेके अुद्योगोंके घोड़ेके सामने नहीं रखना चाहते थे। श्री बिड़ला निश्चित ही अैसी व्यवस्थामें अपना अविश्वास जाहिर करते हैं और अुसके बदलेमें धरती पर अुस स्वर्गकी तसवीर पेश करते हैं जिसे वे पश्चिमी देशोंमें सिद्ध हुआ देखते हैं और भारतमें जिसकी नकल करना चाहते हैं। भारतमें वे जो कुछ देखना चाहते हैं, अुसकी झांकी हमें अुनके अिन शब्दोंमें मिलती है, "लोग अब किसी बड़े आदमीको जिन्दगीका अैश-आराम भोगते देखनेमें ही दिलचस्पी नहीं रखते, परंतु वे स्वयं ही समृद्धि और वैभवका अुपभोग करना चाहते हैं। अिसलिअे मुझे लगता है कि अिस देशमें पूंजीवादकी रक्षा करनेका सबसे अच्छा रास्ता यह है कि छोटे-बड़े लगभग सभी लोगोंको पूंजीवादी बना दिया जाय।"

और मुझे नहीं लगता कि अुन्हें अिस बारेमें कोअी शंका होगी कि सभी लोग संभवतः पूंजीवादी नहीं बन सकते। अिसलिअे वे बड़ी चतुराअीसे अिस बातका चुनाव करते हैं कि पूंजीवादी अपनी बुद्धिसे जो समृद्धि पैदा करें अुसमें देशके करोड़ों लोगोंमें से कौन कौन सीधा भाग लें और अुसका अुपभोग करें। बेशक, पहली पसन्दगी तो मुट्ठीभर पूंजीपतियों और अुद्योगपतियोंकी ही होगी। अिनके आसपास बेकार पढ़े-लिखे लोग अिकट्ठे किये जाने चाहिये, जिनके बारेमें सचमुच यह कहा जा सकता है — जैसा कि श्री बिड़ला अूपर कहते हैं — कि वे पूंजीवादीकी तरह समृद्धिका अुपभोग करना चाहते हैं। हमारी निष्क्रिय आम जनता तो अभी अितनी जाग्रत नहीं हुअी है। ये पढ़े-लिखे लोग 'बुद्धिजीवी' या मध्यमवर्गके नामसे पहचाने जाते हैं। अगर अैसी समाज-व्यवस्थाकी स्थापना की जा सके जिसमें ये बुद्धिजीवी संतुष्ट रह सकें, तो भोलेपनसे यह विश्वास किया जाता है कि युनिवर्सिटियोंमें तालीम पाये हुअे अिन मध्यम वर्गोंकी मददसे समस्त राज्यतंत्रको व्यवस्थित और नियंत्रित किया जा सकेगा। अिन वर्गोंके लोगोंमें से न केवल खानगी क्षेत्रकी विविध नौकरियोंके लिअे योग्य आदमी मिलेंगे, बल्कि टेकनिशियन और सरकारी नौकर भी मिल सकेंगे। किसानों और खेतिहरोंकी विशाल आबादी और अन्य लोगोंका जीवन पहले जैसा ही चलता रहेगा; फर्क केवल अितना रहेगा कि अुनके नये स्वामी परदेशी नहीं बल्कि भारतीय ही रहेंगे, अिसलिअे अिनकी ओरसे ज्यादा अच्छे बरतावकी आशा रखकर वे लोग संतुष्ट रह सकते हैं।

और श्री बिड़ला अपनी बिरादरीके लोगोंके लिअे यह साहस-भरा दावा करते हैं कि "हमें अिस देशमें हर आदमीको सुखी बनाना है। खानगी क्षेत्र या सार्वजनिक क्षेत्रकी सारी बातोंका विचार अिसी संदर्भमें किया जाना चाहिये। अगर कांग्रेस यह समस्या हल नहीं कर सकती, तो अुसे खतम हो जाना पड़ेगा। केवल वही टिकेगा जो अिस समस्याको हल कर सकेगा। हम सबको मिलकर अधिक वास्तविक ढंगसे यह समस्या हल करनेका प्रयत्न करना

www.vinoba.in

चाहिये।" और यह ढंग वही है जो अूपर संक्षेपमें बताया गया है।

सरकार भी नियंत्रित खानगी क्षेत्रके साथ तथा अपने अधिकारियों और निष्णातोंकी सेनाके साथ सार्वजनिक क्षेत्रके नाम पर यही दावा करती है। खानगी क्षेत्रकी तरह सरकारको भी अपना यह दावा पूरा करनेके लिअे विपुल मात्रामें पूंजी चाहिये। खानगी क्षेत्रको पूंजीके सिवा यह भी चाहिये कि सरकारी नीति वैसी ही हो जैसी कि व्यवसायी वर्ग चाहते हैं, अर्थात् जो व्यवस्था वे देशमें कायम करना चाहते हैं अुसके हितमें वह नीति होनी चाहिये। थोड़ेमें, पूंजीपतियों और अुद्योगपतियोंका आजकी सरकार पर प्रभुत्व भले न हो, लेकिन कमसे कम अुसका मार्गदर्शन करने या अुसे प्रभावित करनेकी शक्ति तो अुनके ही हाथमें होनी चाहिये। कर सकें तो अैसा वे जरूर करना चाहेंगे। अिस संबंधमें पूंजीपतियों और अुद्योगपतियोंको सबसे ज्यादा परेशान करनेवाली बात समाजवादी समाज-रचनाका नारा है; अिसलिअे अिस नारेका अर्थ अैसे ढंगसे किया जाना चाहिये जो अुनके हितों और विचारोंके अनुकूल हो। मैं मानता हूं कि आजकल यह बहुत अच्छी तरहसे किया जा रहा है। आजकी सरकार भी अैसी अर्थ-व्यवस्थाकी हिमायती है जो लगभग पूंजीपतियोंकी कल्पनासे मिलती-जुलती है। अतः अुसके लिअे खानगी क्षेत्रकी मदद और सेवा निहायत जरूरी है। यह अेक अैसी परिस्थिति है जो श्री बिड़ला और दूसरे लोगोंमें यह कहनेका साहस पैदा करती है कि "व्यावसायिक बुद्धि तो व्यवसायियोंके ही पास है," और अिसीलिअे सरकारको भी अुनका महत्त्व और मूल्य स्वीकार करना ही पड़ता है।

मुझे लगता है कि श्री बिड़लाका यह कहना सही है। सरकार और अुद्योगपति दोनों भारी अुद्योगोंके हिमायती हैं। दोनों छोटे पैमानेके अुद्योग भी रखना चाहेंगे, लेकिन गांधीजीकी पद्धति और कल्पनासे भिन्न रूपमें। दोनों बुद्धिजीवियों अथवा बेकार शिक्षित मध्यमवर्गको नौकरियां वगैरा देकर अपने पक्षमें करनेके लिअे अुत्सुक हैं। अिस तरह आम जनताका अिस तसवीरमें कोअी स्थान नहीं है। अुनकी भयंकर बेकारी दोनोंमें से अेककी भी **सीधी** चिन्ताका विषय नहीं है।

गांधीजीकी आर्थिक योजनामें आम जनताके छोटेसे छोटे आदमीका हित साधनेका सीधा ध्येय रखा गया है और अुसके आसपास दूसरे वर्गोंके हितोंको और अुनके भलेको भी स्थान मिल जाता है। नये भारतके निर्माणमें यदि अिस विचारको सबसे अधिक सक्रिय और अमली सिद्धान्त नहीं बनाया गया, तो वह दिन हमारे देशमें आये बिना नहीं रहेगा जब आम जनता नये नेता खोजने और अुनके हाथमें अपने भविष्यकी बागडोर सौंपनेके लिअे मजबूर हो जायगी। भारतका लोकतंत्र हमसे यह आशा रखता है और सरकारसे यह तकाजा करता है कि देशके जनसाधारणकी अैसी प्रत्यक्ष सेवा की जाय, जिससे वह अपने ढंगसे स्वावलंबी बनकर समाजमें अपना अुचित स्थान प्राप्त कर सके। अगर आर्थिक स्वतंत्रताका कोअी अर्थ है तो जनसाधारणको राज्य और अुसकी नौकरशाही पर अथवा खानगी पूंजीपति और अुसके आश्रित पढ़े-लिखे मध्यमवर्गकी दया पर निर्भर नहीं बनने देना चाहिये। हमें वर्गों और आम जनताके बीच अैसी लड़ाअीको हर तरहसे टालना चाहिये। अिसका अेकमात्र अचूक मार्ग गांधीजीका मार्ग है, न कि सरकार या पूंजीपतियों और अुद्योगपतियों द्वारा बुद्धिजीवियोंको खुश करनेका मार्ग।

७–११–'५५ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

अहिंसक समाजवादकी ओर

लेखक: **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत २–०–० डा० खर्च ०–१२–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–१४

अभय, स्वराज्य और स्वावलंबन

[ता० ५–७–'५५ को नवरंगपुर पड़ाव (कोरापुट, अुत्कल) पर दिये हुअे प्रार्थना-प्रवचनसे।]

१

अब हमें स्वराज्य प्राप्त हुआ है तो यहां पर बाहरके लोगोंकी जो सत्ता थी वह हट गअी है। अुसके बाद राजा-महाराजा भी गये और जमींदार भी। तो गंगा किस दिशामें बह रही है जरा देख लीजिये और प्रवाहके अनुकूल तैरनेकी तैयारी कीजिये, नहीं तो डूबनेकी नौबत आ जायगी।

स्वराज्यके बाद यहां पर सबको वोटका हक मिला है। अुसमें चाहे पढ़ा-लिखा हो या अपढ़, ब्राह्मण हो या हरिजन, गरीब हो या अमीर, भाअी हो या बहन — सबको अेक ही वोटका हक मिला है। अब आप ही बताअिये कि जिस देशमें अिस तरह सबको वोटका अधिकार मिला है अुस देशमें अूंच-नीच, मालिक-मजदूर, गरीब-अमीर यह सारे भेद कैसे चलेंगे? लोकसत्तामें हरअेकका समान अधिकार हो जाता है। अिस तरह राज्यशास्त्रके अनुसार समानता आ गयी है।

अुधर हमारा धर्मशास्त्र भी कहता है कि सबके हृदयमें अेक ही आत्मा समान रूपसे वास करती है। आपकी भागवतमें लिखा है कि चाहे ब्राह्मण हो, हरिजन हो या कुत्ता हो, सबको परमात्माका अंश समान रूपसे प्राप्त हुआ है। अिस तरह वेदान्त और राज्यशास्त्र दोनों अिकट्ठे होकर जहां पर समानताकी बात करते हैं अुस हालतमें समानता ही आयेगी, और साम्ययोग ही होगा। समानताके माने क्या हैं, अिस बारेमें सोचना चाहिये। अेक तो यह समानता हो सकती है कि सबके सब बिना काम किये मुफ्तका खायें। मालिक-मजदूर, ब्राह्मण-हरिजन, कोअी काम न करे, स्त्रियां भी रसोअी करना छोड़ दें और पुरुष भी रसोअी न करें। तो क्या अैसी समानता चल सकती है? हम तो अैसी समानता चाहते हैं कि स्त्रियां और पुरुष दोनों रसोअी करना सीखें। ब्राह्मण भी हरिजनके जैसा काम करे, मालिक भी मजदूरोंके साथ खेतोंमें मेहनत करे। अिस तरह सबको कंधेसे कंधा भिड़ाकर काम करना होगा।

फिर लड़कोंको तालीम भी अुसी तरह देनी होगी। आज तो तालीम देनेवाला कुर्सी पर बैठता है और लेनेवाला बेंच पर बैठता है। और पुस्तकके जरिये पाठ पढ़ाया जाता है। अिस तरहकी तालीम पानेवाला कोअी भी काम करनेके लिअे नालायक बन जाता है। आज सारे लड़के रसोअी करना नहीं जानते हैं। वे समझते हैं कि यह तो हीन काम है, स्त्रियोंका काम है, हमारा काम नहीं है। हमारा काम खानेका है। अिसलिअे हम अूंचे हैं। हम अैसी तालीम देना चाहते हैं जिसमें लड़कोंको रसोअीका ज्ञान हासिल होगा। अिन दिनों, गरमीके दिनोंमें स्कूलोंको छुट्टियां होती हैं, क्योंकि वे गरमी सहन नहीं कर सकते हैं। अिस तरह जो गरमी और बारिश सहन नहीं कर सकते हैं वे खेतमें कैसे काम करेंगे? अेक दफा हमने हिसाब लगाया था तो मालूम हुआ कि कॉलेजमें पढ़नेवाले हर लड़केके खर्चके लिअे पच्चीस अेकड़ जमीनकी जरूरत होती है। हमारे देशमें तो हर मनुष्यके पीछे अेक ही अेकड़ जमीन है। तो अिस हालतमें हर लड़केकी पढ़ाअीके लिअे पच्चीस अेकड़ जमीन कहांसे आयेगी? और अैसी तालीमसे देशकी अुन्नति कैसे होगी?

हमारे देशके लड़के अैसे होने चाहिये कि अिधर तो ब्रह्मविद्याका गायन करते हैं और अुधर झाड़ू लगाते हैं, गोबर लीपते हैं, खेतमें मेहनत करते हैं। आजकी तालीम अैसी है कि अुसमें न ब्रह्मविद्याका पता है, न अुद्योगका पता है। ब्रह्मविद्या न होनेका परिणाम यह हो रहा है कि हम सब विषयभोग-परायण बन गये हैं, अिन्द्रियोंके

www.vinoba.in

गुलाम हो गये हैं। जो पढ़ा-लिखा होता है वह आराम-तलब हो जाता है और अुसके मनमें भोग और अैश्वर्यकी लालसा सतत बनी रहती है। तालीममें अुद्योग न होनेके कारण हाथ भी बेकार बन जाते हैं। अिस तरह आत्मज्ञानके अभावमें बुद्धि बेकार और अुद्योगके अभावमें हाथ बेकार। फिर ये शिक्षित लोग दस अुंगलियोंसे काम करनेके बजाय हाथमें लेखनी लेकर तीन अुंगलियोंसे काम करते हैं। अगर अिस तरहकी विद्या सबको हासिल होगी तो देश क्या खायेगा?

अिसलिअे आजकी तालीम बदलनी होगी और तालीममें ब्रह्म-विद्या और अुद्योग दोनों बातें सिखानी होंगी। ब्रह्मविद्यासे आत्माकी पहचान हो जायगी। शरीर, मन और अिन्द्रियों पर काबू रहेगा। सब दुनियाके प्रति प्रेम पैदा होगा, आप-परका भेद मिट जायगा, यह छोटासा घर मेरा है, यह खेत मेरा है अिस तरहकी सब बातें मिट जायंगी। जिसको ब्रह्मविद्या हासिल हुअी है वह 'मेरा मेरा' नहीं कहेगा। वह कहेगा कि यह घर, यह जमीन, यह संपत्ति सबकी है। लेकिन जिनको भ्रम-विद्या मिलती है वे कहते हैं कि यह सब मेरा है।

हमारी तालीममें हर लड़का दोनों हाथोंसे काम करेगा और स्वावलंबी बनेगा। हर लड़का अुत्तम रसोअी करेगा। सिपाहीको बनी-बनाअी रसोअी नहीं खिलाअी जानी चाहिये। सिपाही, मुसाफिर अिनको तो रसोअीका अच्छा ज्ञान होना चाहिये। हमारी तालीममें सब लड़के खेतमें मेहनत करेंगे। आज तो देशमें अितना आलस्य फैला हुआ है कि सारे अुद्योग खतम हो रहे हैं। यहां पर बैठे हुअे सब लोग जो कपड़ा पहने हुअे हैं, वह बाहरका खरीदा हुआ है। लेकिन हमारे देशमें हमें सब तरहसे अच्छे अुद्योग करनेवाले लोग चाहिये, अच्छे बढ़अी चाहिये, बुनकर चाहिये, अिन्जीनियर चाहिये, लोहार चाहिये, चमार चाहिये, सिपाही और सेनापति चाहिये। हमें अैसे व्यापारी चाहिये जो व्यापार करके लोगोंकी रक्षा करेंगे, किसीको ठगेंगे नहीं। कोअी धंधा अूंचा नहीं होगा, कोअी नीचा नहीं। कोअी भी यह नहीं कहेगा कि फलाना काम मैं नहीं कर सकता हूं क्योंकि वह हीन काम है।

आज सारी दुनियामें लड़ाअीके लिअे शस्त्रास्त्र बढ़ाये जा रहे हैं। हर देशमें बंदूक, हवाअी जहाज, अेटम बम और हाअिड्रोजन बम बनाये जा रहे हैं। अगर यही सिलसिला चला तो सारी दुनियाका खातमा हो जायगा। अिसके आगे जो लड़ाअी होगी अुसमें मनुष्य-समाज जिन्दा नहीं रहेगा। अगर हम अैसी हिंसाका मुकाबला करना चाहते हैं तो हमें निर्भय बनना होगा। माता-पिताको अपने लड़कोंको डराना या धमकाना नहीं चाहिये, बल्कि प्रेमसे बात समझानी चाहिये। अगर वे अपने बच्चोंको मार-पीट करके अच्छी बातें सिखाना चाहेंगे तो लड़के डरपोक बनेंगे। फिर तो आगे चलकर कोअी भी अुनको धमकाकर अुनसे काम करवा लेगा। मार-पीट कर अच्छे बनानेकी कोशिश की जाती है तो अुससे लड़के अच्छे नहीं बनते हैं, बल्कि डरपोक और गुलाम बन जाते हैं।

जो जुल्मी लोग होते हैं वे अिसी तरह डरा-धमकाकर काम करवाते हैं। जब पाकिस्तान बना तो सिन्धमें से मुसलमानोंने सब हिन्दुओंको भगा दिया, परंतु जो हिन्दू मेहतर थे अुनको रोक लिया। क्योंकि अगर वे चले जाते तो अुन्हें भंगीका काम करना पड़ता। जुल्मी लोगोंका हथकंडा यही है कि वे भयभीत करते हैं और अगर हम डर जायं तो अुनका काम बन जाता है। अिसलिअे हमें संकल्प करना चाहिये कि हम किसीसे डरेंगे नहीं और किसीको डरायेंगे नहीं। जो दूसरोंको डरायेगा वह कभी न कभी किसीसे डरेगा। बिल्ली चूहेको डराती है और कुत्तेसे डरती है, शेर सब प्राणियोंको डराता है, लेकिन बन्दूकसे डरता है। जब हम बलवानसे डरेंगे नहीं और कमजोरको डरायेंगे नहीं, बलवानसे दबेंगे नहीं और कमजोरको दबायेंगे नहीं, तब सच्चे निर्भय बन जायंगे।

आजकल तो गांवके लोग पुलिससे भी डरते हैं। लेकिन हम गांववालोंको समझाना चाहते हैं कि अब स्वराज्य आया है। ये जो बड़े-बड़े मंत्री हैं वे आपके नौकर हैं। आपने पांच सालके लिअे अुन्हें नौकरी पर रखा है। पांच सालके बाद वे फिरसे आपके पास वोट मांगने आयेंगे। आप मालिक हैं। अिसलिअे अुनसे डरना नहीं चाहिये। नौकरोंकी अिज्जत जरूर करनी चाहिये और अुनसे प्यार भी करना चाहिये।

अंग्रेजोंके जमानेमें मामूली पुलिसवाला भी रोबसे आता था और अपनेको बादशाहका प्रतिनिधि समझता था। वाअिसरॉय भी अुनके बुरे कामोंका बचाव कर लेता था। लेकिन अब स्वराज्यमें यह नहीं चलना चाहिये।

जिस देशमें अधिकारी और लोग मिलजुलकर प्रेमसे काम करते हैं वह देश आजाद है। जिस देशमें गुरु शिष्यको डरायेगा नहीं और शिष्य गुरुसे डरेगा नहीं, गुरु शिष्य पर प्यार करेगा और शिष्य गुरुका आदर करेगा, वह देश आजाद है।

जिस देशमें डराना-धमकाना चलता है, वहां पर लोग दब्बू बन जाते हैं। अगर रशियावाले या अमेरिकावाले हमको धमकायेंगे तो हम कहेंगे कि आप हमें क्यों धमका रहे हो? हम तो अपनी खेती करके रोटी हासिल करते हैं, हम कोअी गुनहगार नहीं हैं, हम तो हरिके दास हैं। हरिके दास किसीके सामने सिर नहीं झुकाते। अिन दिनों जो सिर झुकाकर प्रणाम करनेकी बात चलती है वह भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। आज आप बाबाके सामने सिर झुकाते हैं, कल किसी डंडेवालेके सामने झुकायेंगे। अिसलिअे सिर तो परमेश्वरके ही सामने झुकाना चाहिये और सबको नम्रतासे दोनों हाथोंसे प्रणाम करना चाहिये।

हमें अिस तरहका नया समाज और नया राष्ट्र बनाना है। अुसमें सब लोग दोनों हाथोंसे काम करेंगे, कोअी अूंच नहीं होगा, कोअी नीच नहीं होगा; कोअी मालिक नहीं होगा, कोअी मजदूर नहीं होगा; सब भाअी-भाअी बनकर रहेंगे। सबके दिलोंमें प्रेम होगा, सिरमें बुद्धि होगी और प्राणमें श्रद्धा और भक्ति होगी। कोअी किसीसे डरेगा नहीं और कोअी किसीको डरायेगा नहीं। सब आत्माको पहचानते होंगे, देहकी फिक्र नहीं करेंगे। अिन्द्रियों पर काबू रखेंगे और विषयोंके गुलाम नहीं बनेंगे। अिस तरहका देश हमें बनाना है। आज हमें वह मौका मिला है। अिस तरहका सर्वोदय समाज हम बनायेंगे और अुसकी बुनियाद भूदान-यज्ञ होगी।

भूदान-यज्ञमें डराकर या धमकाकर जमीन नहीं मांगनी है, बल्कि प्रेमसे विचार समझाना है। विचार और प्रेममें अितनी ताकत है कि जो प्रेमसे विचार समझायेगा वह दुनियाको जीतेगा। विचार हमारा भगवान् है और प्रेम भक्त है। जहां प्रेम और विचार अेक हो जाते हैं वहां ज्वालामुखीके जैसी ताकत पैदा होती है। भूदान-यज्ञमें जो ताकत है वह प्रेमकी और विचारकी ताकत है।

आप गांव-गांव जाकर प्रेमसे यह विचार समझा दीजिये कि गांवमें कोअी भूमि-हीन नहीं रहेगा और कोअी भूमि-मालिक नहीं रहेगा। मालिक भगवान् होगा और हम सारे सेवक होंगे। सब अेक-दूसरेको मदद करेंगे। शराब, सिगरेट आदि बुरी आदतें छोड़ देंगे। मैंने यहां पर देखा है कि मुखमें रामनामके बदले शराब होती है और कानमें हरिकथाके बदले बीड़ी होती है। अिसका कारण अज्ञान है। लेकिन अिन दिनों शहरके जो ज्ञानी होते हैं, वे भी शराब और बीड़ी पीते हैं। अिसलिअे गांवके मूरख लोग सोचते हैं कि हम अुनका अनुकरण करेंगे तो ज्ञानी बनेंगे। लेकिन समझना चाहिये कि वे ज्ञानी नहीं हैं, वे तो अंधे हैं। अुनके पीछे जानेसे

www.vinoba.in

हमारा काम नहीं चलेगा। सच्चे ज्ञानी और साधु-संतोंके पीछे जानेसे ही हमारा भला होगा। भगवान् हिन्दुस्तान पर जितनी बारिश बरसाता है अुससे अधिक साधु-संतोंकी बारिश बरसाता है। यहां पर रामायण, भागवत, महाभारत, गीता, अुपनिषद् सब कुछ हैं। हमारे पास जितनी विचार-संपत्ति है अुतनी शायद ही और किसी देशके पास होगी। अिसलिअे अुसका लाभ अुठाकर अुसके अनुसार काम करना चाहिये।

हम चाहते हैं कि सब लोग निर्भय बनें। हमारे हाथमें काम हो, मुखमें रामनाम हो और चित्तमें हरिनाम हो। यही बातें हम गांव-गांव सुनाते हैं और खुशीकी बात है कि हजारों लोग हमारी बात सुनते हैं। भोगकी बात सुनानेवाले तो बहुतसे होते हैं। परंतु वह बात सुननेमें अच्छी नहीं लगती है। यद्यपि मोहके कारण मनुष्य भोगमें पड़ता है, फिर भी हृदयमें भोग नहीं होता है। हिन्दुस्तान धर्मका देश है। अिसलिअे यहां पर त्यागकी बात सुनाअी जाती है तो हृदयको संतोष होता है।

२

[ता० ९-७-'५५ को डाबूगांव (कोरापुट, अुत्कल) पड़ाव पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

आज दुनियाके देश अेक-दूसरेसे डरते हैं और दूसरोंको डरानेके लिअे बड़े-बड़े बम बनाते हैं। लेकिन डरनेसे और डरानेसे कहीं शान्ति नहीं हो सकती है, समाधान हासिल नहीं हो सकता है। आज अखबारमें आया है कि आअिन्स्टीनने कहा है कि हमने सरकारको बम बनानेमें मदद दी यह हमारी भूल हुअी। बुद्धिमान लोगोंको समझना चाहिये कि हमें अपनी बुद्धिका अुपयोग समाजके नाशके लिअे नहीं, बल्कि कल्याणके लिअे करना है। भगवान्ने जिन्हें बुद्धि दी है वे अल्पबुद्धिवालोंकी रक्षा करेंगे तो भगवान्के प्रिय हो जायंगे। जो अपनी बुद्धिका अुपयोग स्वार्थमें और दूसरोंको ठगनेमें करेंगे, अुन पर भगवान्का क्रोध होगा। भगवान्ने हमें जो ताकत दी है अुसका अुपयोग हम कमजोरोंका बचाव करनेमें करेंगे तो भगवान्के प्रिय हो जायंगे। जिनके पास ताकत है वे कमजोरोंको तकलीफ देंगे तो भगवान्का अुन पर क्रोध होगा। जो अपनी जमीनका और संपत्तिका अुपयोग अपना ही घर भरनेमें करेगा, अुसका घर नहीं भरेगा, बल्कि जो अुसका अुपयोग दूसरोंकी सेवामें करेगा अुस पर भगवान् प्यार करेगा। जिन्हें भगवान्ने श्रम-शक्ति दी है वे अुसका अुपयोग दूसरोंकी सेवामें करेंगे तो अुन पर भगवान्का प्यार होगा। लेकिन अगर वे अपनी श्रमशक्ति अपने पास ही रखेंगे, आलसके कारण अुसका अुपयोग नहीं करेंगे या स्वार्थके लिअे अुपयोग करेंगे, तो अुन्हें भगवान्का प्यार नहीं हासिल होगा।

बुद्धिमान लोगोंको भगवान्ने बुद्धि अिसलिअे दी है कि वे अुसका अुपयोग दुनियाकी भलाअीके कामोंमें करें। अिसलिअे वैज्ञानिक अिसकी शोध करें कि दुनियाकी फसल बढ़े, दुनियाकी बीमारियां मिटें, अिसके लिअे क्या करना होगा; गायोंका दूध कैसे बढ़ेगा और मांसाहार कैसे मिटेगा अिसकी शोध करें। यह सारी प्रेरणा अुनको मिलेगी तो अुन पर भगवान्की कृपा होगी।

अिंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रान्स, रूस जैसे किसी भी देशमें आज सच्चा स्वराज्य नहीं है। सच्चे स्वराज्यमें तो हरअेकका राज्य होगा। बच्चा-बच्चा कहेगा कि मुझ पर अन्याय नहीं हो सकता है। छोटा बच्चा भी सारे समाजके सामने खड़ा होकर यह बात कह सकेगा। जिस समाजमें दुर्बल मनुष्य भी नीतिकी रक्षाके लिअे दृढ़-भावसे खड़ा होकर सारे समाजके सामने अपनी स्वतंत्र राय प्रकट करता है वह समाज स्वतंत्र है। मेरी बाजू अगर सत्यकी है तो चाहे सारा समाज विरुद्ध हो और मैं चाहे दुर्बल होअूं, लेकिन मैं समाजके सामने खड़ा होकर यह कहूंगा कि समाज जिस राह पर चल रहा है, वह राह गलत है।

हमारे शरीरको कोअी कष्ट दे तो भी हम अुसका नहीं मानेंगे, हम किसीसे डरेंगे नहीं, हम तकलीफें सहते रहेंगे, अैसा जिस देशके, नागरिक कहेंगे वह देश स्वतंत्र है। जो समाज छोटेसे छोटे और कमजोरसे कमजोर भाअीकी अुतनी ही कीमत करता है जितनी कि किसी महान् व्यक्तिकी करता है, वह समाज आजाद है। वैसे आज वोटका हक तो सबको मिला है। चाहे बड़ा हो या छोटा हो, हर किसीको अेक ही वोटका हक है। लेकिन अितनेसे स्वराज्य नहीं होता है। सबका मूल्य, सबकी अिज्जत और सबकी सामाजिक प्रतिष्ठा समान होगी तब स्वराज्य होगा। अिस प्रकारका स्वराज्य आज दुनियाके किसी भी देशमें नहीं है। लेकिन दुनिया अैसे स्वराज्यको चाहती है और अुसका रास्ता ढूंढ़ रही है। लेकिन दुनियाको रास्ता नहीं मिल रहा है। हम मानते हैं कि यहांके अपढ़ किसानोंने दुनियाके लिअे वह रास्ता खोल दिया है, यहां पर क्रान्ति हो रही है। अहिंसात्मक क्रान्तिको हृदय-परिवर्तन कहते हैं, जिसका नमूना यहां पर मिल रहा है।

हम चाहते हैं कि हमारे सारे कार्यकर्ता गांव-गांव जायें और विश्वशान्तिका संदेश सबको सुनायें और यह भी सुनायें कि जैसे चोरी करना गलत है और पाप है अुसी तरह संग्रह करना गलत है और पाप है। जब समाजमें चोरी चलती है तो शान्ति नहीं रह सकती, अुसी तरह संग्रह हो तो शान्ति नहीं रह सकती। जो संग्रह करते हैं वे चोरोंके बाप होते हैं, क्योंकि वे चोरोंको पैदा करते हैं। लेकिन आजकी समाज-रचना अैसी है कि चोरको सजा होती है और चोरको पैदा करनेवाला, समाजको लूटकर संपत्ति अिकट्ठी करनेवाला अिज्जतके साथ घूमता है। चोरको दण्ड देनेवाले सवाअी चोर होते हैं। चोर तो बेचारा रातको डरते-डरते चोरी करता है लेकिन ये संग्रह करनेवाले दिनमें चोरी करते हैं। बाबाके पास अधिक संग्रह नहीं है, लेकिन अुसने अेक धोती पहनी है और अेक ओढ़ी है। अगर कोअी शख्स बाबासे यह कहे कि मेरे पास अेक भी धोती नहीं है, तो बाबाका यह धर्म हो जायगा कि जो धोती ओढ़ी हुअी है अुसका दान करे।

जमीनके बंटवारेके बाद गांव-गांवमें अुद्योग चलने चाहिये। अगर हम चाहते हैं कि यह सेना और शस्त्रसंभार हट जायं और शान्ति स्थापित हो, तो हमारे यहांके गांवोंको स्वावलंबी होना चाहिये। फिर हमारे गांव शहरवालोंसे कहेंगे कि आप हमारी चिन्ता मत कीजिये। हमारे वास्ते कोअी सेना रखनेकी जरूरत नहीं है। हमारे गांवमें चोरियां नहीं होती हैं, क्योंकि हम संग्रह नहीं करते हैं। अिसलिअे हमें पुलिस, अदालत, वकील, सेना आदि सबकी कोअी जरूरत नहीं है। तो फिर अिनको क्यों रखते हो? अगर कोअी पुलिस आकर गांवके लड़केको धमकायेगा तो गांवका लड़का निर्भयतासे कहेगा कि आप हमें डरा-धमका नहीं सकते हैं, क्योंकि हमने कोअी अपराध नहीं किया है। अिस प्रकारका स्वराज्य हमें गांव-गांवमें बनाना है।

विनोबा

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

टिप्पणियां

अमेरिकामें सत्याग्रह

न्यूयार्क शहरसे अेक दिलचस्प खबर मालूम हुअी है। १५ जून, १९५५ का दिन न्यूयार्क शहरके लिअे नागरिक सुरक्षा-दिन घोषित किया गया था। शासनके अधिकारियोंने 'नकली' कवायदोंका अभिनय करके लोगोंको अणुबमकी लड़ाअीके खिलाफ नागरिक सुरक्षाकी तालीम देनेका सोचा था। अिसके लिअे अेक कानून पास किया गया, जिसने अुस दिन 'नकली' कवायदके समय नागरिकोंके लिअे आसरा खोजनेकी बातको आदेशका रूप दे दिया।

शान्तिवादियोंके लिअे भी यह अेक मौका था। अुन्होंने अुपरोक्त कानूनको माननेसे अिनकार करके अिस आदेशका विरोध करनेका निश्चय किया। लगभग ३० आदमियोंके अेक दलने कवायदके समय आसरा खोजनेसे अिनकार कर दिया। अिसलिअे अुन सबको गिरफ्तार करके मजिस्ट्रेटके सामने पेश किया गया।

जाहिर है कि मजिस्ट्रेटके मनमें सविनय कानूनभंग करनेवाले अिन सत्याग्रहियोंके लिअे कोअी कदर नहीं थी, हमदर्दी तो बिलकुल नहीं थी। सत्याग्रही बहुत भारी रकमकी जमानत पर छोड़े गये। फेलोशिप ऑफ रिकन्सीलिअेशन नामक संस्थाके युवक-विभागसे संबंध रखनेवाले पत्र 'फोरकास्ट' के जुलाअी १९५५ के अंकमें, जिसमें से यह खबर मुझे मिली है, कहा गया है कि सत्याग्रहियोंके लिअे अेक अस्थायी बचाव-कमेटी कायम की गअी है और अुसका खर्च चलाने तथा जमानतकी भारी रकमके लिअे फण्ड जमा करनेके खातिर अेक अपील निकाली गअी है। अब यह देखना है कि ये अमेरिकन सत्याग्रही अपना गुनाह मंजूर करके स्वेच्छासे जेल जानेको तैयार होते हैं या कैदके बदले किये जानेवाले भारी जुर्मानेकी रकम अदा करके छूट जाते हैं। भारतमें हमने गिरफ्तार किये जाने पर भी सत्याग्रहकी अेक पद्धतिके नाते जमानत पर छूटना पसन्द नहीं किया और कभी राजीखुशीसे जुर्माना नहीं दिया। अमेरिकाकी यह घटना बताती है कि सत्याग्रह अपनी जन्मभूमिसे बाहर दूर दूरके देशों तक कैसे पहुंच गया है। अिसका कारण यह है कि सत्याग्रह विचार और विश्वासकी स्वतंत्रताको लोकतांत्रिक ढंगसे दृढ़तापूर्वक प्रकट करनेका अेक विश्वव्यापी सिद्धान्त तथा सत्यपूर्ण और अहिंसक पद्धतिसे सामाजिक परिवर्तन करनेका अेक जबरदस्त साधन है।

३–११–'५५ म० प्र०
(अंग्रेजीसे)

केनियामें अंग्रेजोंका कुशासन

हैरोमें शिक्षा पाये हुअे अेक भूतपूर्व औपनिवेशिक प्रशासक कर्नल रिचार्ड मेनर्ट्ज़हैजेनने, जो पहले-पहल १९०१ में केनिया गये थे और बादमें जिन्होंने कअी वर्ष पूर्वी अफ्रीकामें बिताये, माअु माअु आन्दोलनके खिलाफ अपनाअी जा रही ब्रिटिश नीतिकी कड़ी निन्दा की है। (देखिये, 'पीस न्यूज', लन्दन, ३० सितंबर १९५५) अुनका कहना है कि यह आन्दोलन अफ्रीकियों द्वारा केवल जमीन वापिस पानेके लिअे और गोरोंसे अपना पिण्ड छुड़ानेके लिअे किया जा रहा है। क्या यह ब्रिटेन पूर्व अफ्रीकामें अुपनिवेशवादके जिस सिद्धान्तसे मजबूतीसे चिपटा हुआ है अुसके खिलाफ अेक अक्षम्य अपराध नहीं है?

कुछ हफ्ते पहले अिस विषयमें की गअी अदालती जांचकी अेक कहानी आअी थी जिसमें कहा गया था कि केनियामें तैनात की गअी ब्रिटिश सेना और पुलिस माअु माअु आन्दोलनकारियोंके साथ कैसा अमानुषिक बरताव करती है। कर्नल मेनर्ट्ज़हैजेन अैसे आंतक फैलानेवाले शासनकी ताअीद करते हुअे लिखते हैं:

> "ब्रिटेनके अितिहासमें पहले कभी किसी बगावत, मुल्की गड़बड़ी या फौजी कार्रवाअीका सामना अैसे क्रूर और अनुचित तरीकोंसे नहीं किया गया था।
>
> "प्राणदण्डकी सजायें महीनेमें ५० तक पहुंच गअी हैं; बहुतोंको फौजी सिपाहियोंके कब्जेसे भाग जाने, आतंकवादियोंके साथ मेलजोल रखने, गैरकानूनी हथियार रखने या सौगन्ध लेनेकी विधिमें हाजिर रहने जैसे छोटे छोटे गुनाहोंके लिअे भी प्राणदण्डकी सजा दे दी जाती है।"

मैं समझता हूं यह सब वैसा ही है जैसा कि हमारे देशमें विदेशी शासनके खिलाफ हुअे १८५७ के गदरके समय देखा गया था। अुसी क्रूरताका सौ साल बाद भी कायम रहना यह बताता है कि किसी राष्ट्रका अुपनिवेशोंके शोषणका स्वभाव मिटना बहुत कठिन है। कर्नल अन्तमें कहते हैं:

> "किकुंयुके साथ हमने जो व्यवहार किया है अुसे मैं सार्वजनिक दुर्व्यवहारका अेक अैसा अुदाहरण मानता हूं जिसका कोअी बचाव नहीं हो सकता; वह बदलेका अैसा क्रूर कृत्य है जिसकी मिसाल हमारे साम्राज्यके अितिहासमें नहीं मिलती।"

क्या ब्रिटेनकी मानवीय अन्तरात्मा अितनी मर गअी है कि वह कानून और व्यवस्थाके नाम पर केनियामें चलनेवाले अिस मानव-संहार और कुशासनको रोक नहीं सकती?

२–११–'५५ म० प्र०
(अंग्रेजीसे)

दक्षिण अफ्रीकामें रंगद्वेष

संयुक्त राष्ट्रसंघमें अेक अरब प्रतिनिधिने अपने निम्नलिखित प्रश्नों द्वारा दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंको कुछ खरी बातें सुना दीं:

> "जब दक्षिण अफ्रीकामें ८५,००,००० रंगीन लोग बेहतर चीजोंकी मांग करने लगेंगे तब क्या होगा? वे ताकतका अुपयोग करके यह मांग करेंगे। तब २० लाख गोरोंके क्या हाल होंगे?
>
> "वे अिस धोखेमें न रहें कि अुनके हवाअी जहाज और मशीनगन अिसका अुत्तर दे सकेंगे।"

यह थोड़ेमें अफ्रीका और अेशियाके अुपनिवेशवाद-विरोधी मोर्चेकी चुनौती है। क्या पूर्व और दक्षिण अफ्रीकाके गोरे अिस पर ध्यान देकर अपने व्यवहारमें सुधार करेंगे? वे यह कह कर अपनेको सुरक्षित माननेके भ्रममें न रहें कि रंगीन लोगोंके साथ अुनका अमानुषिक व्यवहार अुनका खानगी या भीतरी मामला है। वह सारे विश्वकी समस्या है। संयुक्त राष्ट्रसंघको यह देखना है कि अुपनिवेशोंमें बसे हुअे गोरे अपना व्यवहार सुधारें।

२-११-'५५ म० प्र०
(अंग्रेजीसे)

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

[तीसरी आवृत्ति]

लेखक: **जुगतराम दवे**; अनु० **रामनारायण चौधरी**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
महाराष्ट्रको सन्तोष होना चाहिये	मगनभाई देसाई	२९७
भारतमें देहाती सभ्यताका निर्माण	वैकुण्ठभाअी मेहता	२९७
कल्याण-राज्य बनाम सर्वोदय-राज्य — ३	पी० श्रीनिवासाचारी	२९८
मौजूदा आर्थिक आबहवा	मगनभाई देसाई	३००
अभय, स्वराज्य और स्वावलम्बन	विनोबा	३०१
टिप्पणियां:		
अमेरिकामें सत्याग्रह	म० प्र०	३०४
केनियामें अंग्रेजोंका कुशासन	म० प्र०	३०४
दक्षिण अफ्रीकामें रंगद्वेष	म० प्र०	३०४

www.vinoba.in